PHILOSOPHY

Ajeet kumar
Assistant professor
C.M.S College.
Domwarina,
Khutauna.

Date 21/05/2020

GEN/SUB

Jainism Jiva

जैन दर्शन में चेतना को जीव कहते हैं जीव में स्वभावतः दर्शन अनन्त ज्ञान, अनन्त आनन्द होता है। जैन मत में जीव को अनन्त चतुष्टय से युक्त माना जाता है। जिस प्रकार प्रकाश अन्य पदार्थों को भी प्रकाशित करता है और अपने को भी प्रकाशित करता है उसी प्रकार ज्ञान अन्य पदार्थों को भी प्रकाशित करता है जैन दर्शन की यह मान्यता न्याय वैशेषिक दर्शन के विरोध में जाती है न्याय दर्शन की यह मान्यता है कि ज्ञान केवल बाह्य पदार्थों को प्रकाशित करता है अपने को ~~सभी~~ भी। जीवात्मा किसी को जानने के साथ ही स्वतः को भी तत्काल जानता है। यद्यपि जीव स्वरूपतः अनन्त चतुष्टय से युक्त है, किन्तु कर्मपुद्गलों के कारण आत्मा शुद्ध

Scanned with CamScanner

चैतन्यरूप आत्मा को ज्ञाता है। जिस प्रकार सूर्य सम्पूर्ण संसार को आलोकित करता है, किन्तु मेघ एवं तुषार आदि द्वारा उत्पन्न व्यवधान के कारण वह संसार को नहीं आलोकित कर पाता, उसी प्रकार जीव भी अनन्त-चतुष्टय से युक्त होने पर भी कर्म-पुद्गलों के आवरण के कारण अपने पूर्ण ज्ञान को अभिव्यक्त नहीं कर पाता कर्मपुद्गलों का पूर्णरूपेण क्षय हो जाने पर वह पुनः सर्वज्ञ हो जाता है और उसके पूर्ण ज्ञान की अभिव्यक्ति होती है जीव जिस प्रकार अपने स्वरूप की अभिव्यक्ति करे ? उसको कर्मपुद्गल कैसे बाधक हों ? वह जिस प्रकार कर्मपुद्गलों से पूर्णतया मुक्त हो इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए उसे ज्ञानेन्द्रिय एवं मन आदि साधनों की आवश्यकता नहीं होती। वस्तुतः यह ज्ञान, जीवात्मा को आवरणक कर्म पुद्गलों के विनाश के बाद बिना किसी साधन के प्राप्त होता है।